Brainbox
learn easy

EXPLAINATION :

पद 1 : ऊधौ,तुम हौ अति बड़भागी

गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव, तुम्हीं सबसे अच्छे और भाग्यशाली हो जो समस्त प्रेमसूत्रों से अनासक्त हो और किसी में भी तुम्हारा मन अनुरक्त नहीं है। तात्पर्य यह है कि तुम अत्यंत अभागे हो जो प्रेमरस को नहीं समझते। तुम्हारी दशा तो उस कमलपत्र की भाँति है जिसने जल के भीतर रहते हुए भी जल से अपने शरीर में दाग़ नहीं लगाया। आशय यह है कि तुम रहते तो श्रीकृष्ण के निकट हो, लेकिन उनके प्रेम से सदैव अनासक्त रहे। यही नहीं, जैसे जल में तेल की गगरी कोड़ुबा दिया जाए तो उस पर जल की एक बूँद भी नहीं रुकती। तुम प्रेमकेसंबंध में क्या जानो जब कि तुमने कभी न तो प्रेम की नदी में अपने पाँव को निमज्जित किया और न श्रीकृष्ण के सौंदर्य पराग में तुम्हारी दृष्टि ही अनुरक्त हुई। सूरदास के शब्दों में गोपियों का कथन है कि सबसे पगली और भोलीभाली हम अबलाएँ ही हैं जो गुड़ और चींटीकी भाति श्री कृष्ण की रूप-माधुरी में चिपट गईं।

The Gopi(cow herds) address Uddav- Oh Uddav! You are very lucky. अति बडभागी or बड़े भाग्यवान हो | You were never caught in the thread of love. Your mind doesn't know anything about love. You are like the lotus leaf – Lotus leaf is in water but does not touch the water. You are with Krishna but never loved

him. You are like the drop of oil in the water pot which doesn't get effected by the water. You have not experienced the love and affection of Krishna. You have done a good thing of not experiencing love, nor seen Krishna with love and affection. We are like the ants which surround the jaggery. We are entrapped with love of Krishna.

पद 2 : मन की मन ही माँझ रही

श्री कृष्ण जी ने उद्धव जी के द्वारा गोपियों को यह सन्देश पहुँचाया कि वे लौटकर वापस नहीं आयेंगे | इससे विरह में जल रही गोपियाँ दुःख से भर जाती हैं| सूरदास के इस पद में गोपियाँ उद्धव से कह रही हैं कि जबसे श्री कृष्ण जी ने गोकुल को छोड़ा है, उनके मन की इच्छा मन में ही रह गई है |

Brainbox learn easy

उद्धव हम जाकर किसे अपनी कहानी सुनाएँ, यह कहने योग्य भी नहीं है| श्री कृष्ण के अतिरिक्त कोई अन्य इसके पात्र नहीं है जिसे अपनी व्यथा को कहा जा सके। वे उद्धव जी को भी इसका पात्र नहीं समझती हैं। श्री कृष्ण जी के वापस लौट आने की आशा में ही उन्होंने यह दुःख सहे हैं | अब जब श्री कृष्ण जी का योग सन्देश प्राप्त हुआ है तो उन्हें गोपियाँ बिरह में टूट सी गई हैं | जहाँ पर ऐसी राह थी कि हमें यहाँ से सहायता मिलेगी वहीँ से दुःख की प्रबल धारा बही है | अब हम क्यों मर्यादा को धारण करें जब श्री कृष्ण जी ने हमें त्याग ही दिया है तो हमारी सभी मर्यादें नष्ट हो गई हैं |

The Gopis tell Uddav – "whom should we tell our plight" We expected Krishna to come here

and listen to our love, but instead Krishna has sent Uddav who talks about YOG(Knowledge). We will forget our love to Krishna if Uddav continues to give his sermon about Knowledge.

पद 3 : हमारैं हरि हारिल की लकरी

गोपियाँ श्री कृष्ण जी से कह रही हैं कि हमारे मन में कृष्ण के प्रति अनन्य और अटूट प्रेम है जो तुम्हारे योग के सन्देश से कम नहीं होगा अपितु अधिक बढ़ जाएगा| जैसे हारिल (एक पक्षी) अपने पंजों में विशेष प्रकार की लकड़ी को पकडे रहता है वैसे ही हमने अपने हृदय में श्री कृष्ण को मन वचन और क्रिया से पकड़ रखा है | रात दिन सोते जागते हमने कृष्ण जी को ही पकड़ रखा है | यही कारण है कि तुम्हारा यह योग का सन्देश हमको कडवी ककड़ी के समान लगता है | तुम जो ये ब्याधि (विकार) लाए हो इसका हमारे ऊपर कोई असर नहीं होने वाला है | तुम तो यह सन्देश उनको सुनाओ जिनका मन पूर्ण रूप से श्री कृष्ण के प्रति समर्पित नहीं है | हम श्री कृष्ण के प्रेम में पूर्ण रूप से रंगी हुई हैं इसलिए तुम्हारी बातों का हम पर कोई असर नहीं होने वाला है|

1.Gopikas continue their address to Uddav. Oh Uddav! We are like the Haril bird, which always clings a piece of wood in its claws and never lets it go. We have Krishna in our minds. All the time we always think about Krishna. Even in our dreams we repeat

Krishna's name. But we listen to your advice about Yog Sadhana which is like a bitter cucumber to us, which is tasteless to us. Oh Uddav please give your advice about Yog Sadhana to those whose mind is wandering here and there, and not to us who fully belief in Krishna.

<u>पद 4 : हरि हैं राजनीति पढ़ि आए</u>

उद्धव जी के द्वारा जब गोपियों को श्री कृष्ण जी के नहीं आने के विषय में बताया तो गोपियाँ दुखी हो गई और स्वंय को दिलाशा देकर कहने लगी कि श्री कृष्ण जी ने राजनीति का पाठ पढ़ लिया है |अब उनको संवेदनाओं से कोई मतलब नहीं है | एक तो श्री कृष्ण पहले से ही चतुर थे ऊपर से वे राजनीति का भी ग्रन्थ पढ़ आए हैं | इस प्रकार से श्री कृष्ण जी अब और अधिक चतुर बन गए हैं | अब जब बुद्धि अधिक बढ़ गई है तो वे राजनीति का पाठ पढ़कर और अधिक चतुर हो गए हैं।

हे उद्धव पहले के लोग भलाई के लिए फिरते थे, यात्रा करते थे लेकिन तुम यहाँ हमारा कौनसा भला कर रहे हो। श्री कृष्ण जी ने जो हमारा मन चुरा लिया था हम उसको वापस ले लेंगी।

श्री कृष्ण जी ने तो अनीति दूर की थी, श्री कृष्ण जी तो न्याय करने वाले हैं तो अब फिर क्यों अनीति कर रहे हैं।राजा का धर्म तो यही होता है कि वे प्रजा का ध्यान रखें, उनको सताये

नहीं।भाव है कि श्री कृष्ण जी हमें सता कर राजधर्म का पालन नहीं कर रहे हैं।

1.Gopis tell Uddav- Krishna has read Politics. We know his conspiracy now. We don't believe either in you or in Krishna. He wants us to forget him by learning about Yog Sadhana. Oh Uddav, No king should cheat his citizens. So, let Krishna take back the Yog Sadhana and give his darshan !

Brainbox learn easy